SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

हिंदी उपन्यास में मनोहर श्याम जोशी का अवदान

पूजा तिवारी, शोधार्थी, हिंदी विभाग
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author

पूजा तिवारी, शोधार्थी
E-mail : pt261770@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 04/02/2026
Revised on : 07/04/2026
Accepted on : 16/04/2026
Overall Similarity : 00% on 08/04/2026

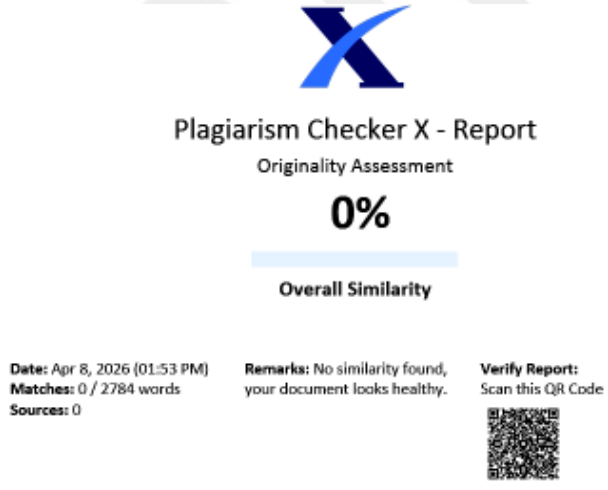

शोध सार

हिन्दी उपन्यास की परंपरा में मनोहर श्याम जोशी का प्रवेश एक ऐसे रचनाकार के रूप में होता है, जिसने कथा–साहित्य को केवल सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति तक सीमित न रखकर, उसे मानव–मन की जटिल संरचना, आंतरिक द्वंद्व तथा संबंधों की मनोवैज्ञानिक उलझनों से जोड़ा। उनका उपन्यास–जगत वस्तुतः उस मध्यवर्गीय जीवन का दर्पण है, जहाँ बाह्य घटनाओं से अधिक महत्वपूर्ण मन के भीतर घटित होने वाली प्रक्रियाएँ होती हैं। मनोहर श्याम जोशी ऐसे उपन्यासकार हैं जिनके यहाँ कथा का विकास किसी नाटकीय घटना–क्रम से नहीं, बल्कि चेतना की सूक्ष्म गतियों, स्मृति, अवसाद, कुंठा, आकांक्षा और असफलता–बोध से होता है। इस दृष्टि से उनका उपन्यास–जगत पारंपरिक कथानक–प्रधान उपन्यासों से भिन्न और आधुनिक मनोवैज्ञानिक उपन्यास की परंपरा से अधिक समीप है। मनोहर श्याम जोशी का रचनात्मक विकास पत्रकारिता, नाटक और टेलीविजन लेखन के माध्यम से हुआ। इस बहुआयामी अनुभव ने उनके उपन्यासों को एक विशिष्ट दृष्टि प्रदान की। पत्रकारिता ने उन्हें समाज की विसंगतियों से जोड़ा, जबकि नाट्य और टेलीविजन लेखन ने संवाद, चरित्र–चित्रण तथा मनोवैज्ञानिक तनाव को उभारने की क्षमता प्रदान की। उनके उपन्यासों में संवाद केवल कथोपकथन नहीं रह जाते, बल्कि पात्रों की मानसिक अवस्था, असंतोष, दुविधा और आत्मसंघर्ष को उद्घाटित करने का माध्यम बनते हैं। यही कारण है कि जोशी के पात्र बाहरी क्रियाओं से कम और आंतरिक प्रतिक्रियाओं से अधिक पहचाने जाते हैं।

मुख्य शब्द

मनोविज्ञान, साहित्य, मनोहर श्याम जोशी, मध्यवर्ग, संस्कृति, पत्रकारिता.

यदि हिन्दी उपन्यास की विकास–यात्रा पर दृष्टि डाली जाए, तो प्रेमचंद के यथार्थवादी उपन्यासों से लेकर अज्ञेय और निर्मल वर्मा तक, उपन्यास धीरे–धीरे सामाजिक यथार्थ से मानसिक यथार्थ की ओर अग्रसर होता दिखाई देता है। मनोहर श्याम जोशी इसी परंपरा की अगली कड़ी हैं, जहाँ समाज

पात्रों की मानसिक संरचना को प्रभावित करता है, परंतु कथा का केंद्र मनुष्य का अंतर्मन बन जाता है। जोशी के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ एक पृष्ठभूमि के रूप में उपस्थित रहता है, किंतु कथा का वास्तविक तनाव पात्रों की आंतरिक असुरक्षा, अकेलापन, संबंध–विघटन और आत्मसंघर्ष से उत्पन्न होता है। इस दृष्टि से वे हिन्दी के उन उपन्यासकारों में शामिल हैं, जिन्होंने उपन्यास को मनोवैज्ञानिक गहराई प्रदान की।

मनोहर श्याम जोशी के उपन्यास–जगत की मानसिक संरचना को समझने के लिए उनकी पत्रकारिता–पृष्ठभूमि का विश्लेषण अत्यंत आवश्यक है। पत्रकारिता ने उन्हें समाज की केवल बाहरी घटनाओं से ही परिचित नहीं कराया, बल्कि उन घटनाओं के पीछे कार्यरत मानसिक, सामाजिक और वैचारिक प्रक्रियाओं को समझने की दृष्टि प्रदान की। यही कारण है कि उनके उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ किसी स्थूल रूप में नहीं, बल्कि पात्रों की चेतना के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य के संदर्भ में यह माना गया है कि पत्रकारिता और साहित्य का संबंध केवल सूचना और कल्पना का नहीं, बल्कि अनुभव और संवेदना का भी है। जैसा कि "आधुनिक हिन्दी उपन्यास" में संकेत मिलता है, आधुनिक उपन्यासकार सामाजिक घटनाओं को तभी सार्थक बना पाता है, जब वह उन्हें पात्र की मानसिक अनुभूति से जोड़ता है। मनोहर श्याम जोशी इस सिद्धांत को व्यवहार में उतारते हैं। उनके उपन्यासों में पत्रकारिता से प्राप्त यथार्थ–बोध पात्रों की मानसिकता को गहराई प्रदान करता है।

पत्रकारिता के अनुभव ने जोशी को मध्यवर्गीय जीवन की उन विसंगतियों से परिचित कराया, जो सामान्यतः साहित्य में सतही रूप में प्रस्तुत की जाती हैं। कार्यालयी जीवन, सत्ता–संरचना, सामाजिक दिखावा, नैतिक दोहरापन ये सभी तत्व उनके उपन्यासों में बार–बार उभरते हैं, किंतु इनका उद्देश्य किसी सामाजिक व्यवस्था की आलोचना भर नहीं है, बल्कि यह दिखाना है कि ऐसी परिस्थितियाँ व्यक्ति के मन पर किस प्रकार दबाव और तनाव उत्पन्न करती हैं। उपन्यास "कसप" में यह प्रभाव विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है। यहाँ पात्र किसी बड़े सामाजिक संघर्ष में नहीं उलझा है, बल्कि रोजमर्रा के जीवन की साधारण घटनाएँ ही उसके भीतर असाधारण मानसिक उथल–पुथल पैदा कर देती हैं। सामाजिक अपेक्षाएँ और व्यक्तिगत असुरक्षाएँ मिलकर उसके भीतर आत्मग्लानि और हीनता–बोध को जन्म देती हैं। यह स्थिति पत्रकारिता से प्राप्त उस दृष्टि का परिणाम है, जहाँ छोटी–छोटी घटनाओं के पीछे छिपे बड़े मानसिक सत्य उजागर होते हैं।

पत्रकारिता ने जोशी को संवाद की तीक्ष्णता भी प्रदान की। उनके उपन्यासों के संवाद संक्षिप्त होते हुए भी अत्यंत प्रभावी हैं, क्योंकि वे पात्रों की मानसिक स्थिति को प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त करते हैं। यह संवादात्मक शैली उपन्यास को नाटकीय नहीं बनाती, बल्कि उसे मनोवैज्ञानिक रूप से सघन बनाती है। इस दृष्टि से जोशी का उपन्यास–जगत पत्रकारिता और साहित्य के रचनात्मक समन्वय का उदाहरण है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो जोशी के पात्र अक्सर दमन (Repression) और असंतोष की स्थिति में रहते हैं। वे अपनी इच्छाओं को खुलकर व्यक्त नहीं कर पाते और सामाजिक मर्यादाओं के दबाव में उन्हें भीतर ही भीतर दबाते चले जाते हैं। यह स्थिति धीरे–धीरे मानसिक तनाव का रूप ले लेती है। जैसा कि "हिन्दी उपन्यास और मनोविज्ञान" में कहा गया है, आधुनिक उपन्यास का नायक बाहरी संघर्ष से अधिक आंतरिक संघर्ष का शिकार होता है। मनोहर श्याम जोशी के उपन्यास इस कथन की पुष्टि करते हैं।

पत्रकारिता ने जोशी को यथार्थ के प्रति ईमानदार बनाया, जबकि उपन्यास ने उन्हें उस यथार्थ के मनोवैज्ञानिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता दी। इसी कारण उनके उपन्यास न तो शुद्ध सामाजिक दस्तावेज़ बनते हैं और न ही केवल आत्मकथात्मक मनोविश्लेषण। वे दोनों के बीच संतुलन स्थापित करते हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मनोहर श्याम जोशी के उपन्यास–जगत की मानसिक संरचना उनकी पत्रकारिता–पृष्ठभूमि से गहराई से जुड़ी हुई है। पत्रकारिता ने उन्हें समाज को देखने की दृष्टि दी, और उपन्यास ने उस दृष्टि को मनोवैज्ञानिक संवेदना में रूपांतरित किया।

मनोहर श्याम जोशी का उपन्यास–जगत मुख्यतः शहरी मध्यवर्ग के इर्द–गिर्द घूमता है। यह वह वर्ग है जो न तो पूरी तरह संतुष्ट है और न ही खुलकर विद्रोह कर पाने में सक्षम। इस वर्ग की सबसे बड़ी त्रासदी उसकी मानसिक दुविधा है। जोशी के उपन्यासों में मध्यवर्गीय पात्र अक्सर असफलताओं से घिरे हुए, सामाजिक अपेक्षाओं के बोझ से दबे हुए, निजी इच्छाओं और सार्वजनिक मर्यादाओं के बीच फँसे हुए दिखाई देते हैं। इन परिस्थितियों में पात्रों का मन लगातार तनाव, अवसाद और आत्मग्लानि से गुजरता है। यही मानसिक प्रक्रिया जोशी के उपन्यासों को विशिष्ट मनोवैज्ञानिक स्वर प्रदान करती है।

मनोहर श्याम जोशी के उपन्यासों में 'संबंध' केवल सामाजिक या पारिवारिक ढाँचा नहीं हैं, बल्कि वे मानसिक निर्भरता, भावनात्मक अपेक्षा और असंतोष की जटिल संरचनाएँ हैं। पति–पत्नी, प्रेमी–प्रेमिका, मित्र, सहकर्मी हर संबंध के भीतर एक मनोवैज्ञानिक तनाव विद्यमान रहता है। उनके पात्र संबंधों से भाग नहीं पाते, परंतु उनमें पूरी तरह सहज भी नहीं हो पाते। यह

द्वंद्व उनकी मानसिक स्थिति को और अधिक जटिल बना देता है। इस प्रकार जोशी का उपन्यास–जगत संबंधों के माध्यम से मानव–मन की परतों को खोलता है।

जोशी के उपन्यासों की एक प्रमुख विशेषता पात्रों की अंर्तमुर्खता है। उनके नायक प्रायः "अपने अतीत में उलझे रहते हैं, वर्तमान से असंतुष्ट रहते हैं, भविष्य को लेकर आशंकित रहते हैं" यह स्थिति पात्रों के भीतर निरंतर चलने वाले आत्मसंघर्ष को जन्म देती है। यही आत्मसंघर्ष कथा को आगे बढ़ाने का प्रमुख कारक बनता है, न कि बाहरी घटनाएँ। इस दृष्टि से मनोहर श्याम जोशी का उपन्यास–जगत आधुनिक मनोवैज्ञानिक उपन्यास की परंपरा में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। हिन्दी उपन्यास की परंपरा में मनोहर श्याम जोशी का साहित्यिक प्रवेश एक ऐसे रचनाकार के रूप में होता है, जिसने उपन्यास को केवल सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति तक सीमित न रखकर, उसे मानव–मन की आंतरिक संरचना के विश्लेषण का माध्यम बनाया। आधुनिक हिन्दी उपन्यास में यह प्रवृत्ति पहले से विद्यमान थी, किंतु जोशी ने इसे मध्यवर्गीय जीवन की मानसिक जटिलताओं से जोड़कर एक नया विस्तार प्रदान किया।

जैसा कि "आधुनिक हिन्दी उपन्यास" में संकेत किया गया है, आधुनिक उपन्यासकार का प्रमुख लक्ष्य व्यक्ति के बाह्य जीवन से अधिक उसके अंतर्जगत को उद्घाटित करना है। मनोहर श्याम जोशी इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए अपने उपन्यासों में कथानक से अधिक चेतना–प्रवाह, आत्मसंघर्ष और मानसिक द्वंद्व को महत्व देते हैं। उनके यहाँ कथा घटनाओं से नहीं, बल्कि पात्रों के मन में घटित सूक्ष्म परिवर्तनों से आगे बढ़ती है। जोशी के उपन्यासों में व्यक्ति समाज से टकराता नहीं है, बल्कि समाज के भीतर रहकर मानसिक रूप से विघटित होता है। यह विघटन किसी एक घटना का परिणाम नहीं, बल्कि निरंतर चलने वाली मानसिक प्रक्रिया है। उनके पात्र सामाजिक अपेक्षाओं, पारिवारिक दबावों और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करते हुए भीतर ही भीतर टूटते चले जाते हैं। यह स्थिति उनके उपन्यासों को विशुद्ध मनोवैज्ञानिक स्वर प्रदान करती है।

मनोहर श्याम जोशी का उपन्यास–जगत विशेष रूप से मध्यवर्गीय जीवन से जुड़ा हुआ है, जहाँ सफलता की आकांक्षा और असफलता का बोध साथ–साथ उपस्थित रहते हैं। उनके उपन्यास "हरिया हरक्यूलिस की हैरानी" में यह मानसिक स्थिति स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है, जहाँ पात्र अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच फँसकर आत्मसंघर्ष का शिकार होता है। यहाँ उपन्यास का केंद्रीय तत्व कोई बाहरी घटना नहीं, बल्कि उस घटना से उत्पन्न मानसिक प्रतिक्रिया है। इस प्रकार मनोहर श्याम जोशी का साहित्यिक प्रवेश हिन्दी उपन्यास में एक ऐसे मनोवैज्ञानिक रचनाकार के रूप में होता है, जिसने आधुनिक व्यक्ति की मानसिक विडंबनाओं को गहरी संवेदनशीलता और प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत किया है।

मनोहर श्याम जोशी के उपन्यास–जगत को समझने के लिए उनकी पत्रकारिता और जीवनानुभव का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। पत्रकारिता ने उन्हें समाज की बाहरी संरचनाओं के साथ–साथ उसके भीतर कार्यरत मानसिक प्रवृत्तियों को समझने की दृष्टि प्रदान की। यही कारण है कि उनके उपन्यासों में सामाजिक घटनाएँ केवल सूचना के रूप में नहीं आतीं, बल्कि पात्रों के मानसिक संसार को प्रभावित करने वाले कारकों के रूप में उपस्थित रहती हैं। पत्रकारिता के माध्यम से जोशी ने समाज की विसंगतियों, सत्ता–संरचनाओं और मध्यवर्गीय जीवन की दुविधाओं को निकट से देखा। यह अनुभव उनके उपन्यासों में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है। उनके पात्र सामाजिक दबावों के सामने खुला विद्रोह नहीं करते, बल्कि उन दबावों को अपने भीतर आत्मसात कर लेते हैं। परिणामस्वरूप उनके मन में कुंठा, भय और असंतोष का संचय होता चला जाता है।

उपन्यास "कसप" में यह स्थिति विशेष रूप से उभरकर सामने आती है। यहाँ सामाजिक अपेक्षाएँ और व्यक्तिगत असुरक्षाएँ पात्र के मन में निरंतर संघर्ष उत्पन्न करती हैं। कथा का केंद्र कोई विशिष्ट घटना नहीं, बल्कि उस घटना से उत्पन्न मानसिक प्रतिक्रिया है। इस प्रकार जोशी के उपन्यास पत्रकारिता की यथार्थपरक दृष्टि और साहित्य की मनोवैज्ञानिक संवेदनशीलता का संतुलित संयोजन प्रस्तुत करते हैं। जैसा कि "हिन्दी उपन्यास और मनोविज्ञान" में उल्लेखित है, आधुनिक उपन्यास में सामाजिक यथार्थ तभी सार्थक होता है, जब वह पात्र की मानसिक संरचना को प्रभावित करे। मनोहर श्याम जोशी के उपन्यास इस सिद्धांत को व्यवहारिक रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनके यहाँ समाज और मनोविज्ञान परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक–दूसरे के पूरक तत्व हैं।

हिन्दी उपन्यास के ऐतिहासिक विकासक्रम में मनोहर श्याम जोशी का स्थान आधुनिक मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार के रूप में निर्धारित किया जा सकता है। प्रेमचंद के उपन्यास सामाजिक यथार्थ और नैतिक संघर्ष पर केंद्रित हैं, जबकि उत्तरवर्ती उपन्यासकारों ने व्यक्ति के अंतर्मन को अधिक महत्व दिया। जोशी इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हैं, किंतु उनकी विशेषता यह है कि वे मनोविज्ञान को किसी सिद्धांत के रूप में नहीं, बल्कि जीवनानुभव के स्वाभाविक परिणाम के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

हिन्दी उपन्यास के विकास के संदर्भ में "हिन्दी उपन्यासः परंपरा और प्रयोग" में यह स्पष्ट किया गया है कि आधुनिक उपन्यास व्यक्ति की मानसिक जटिलताओं को अभिव्यक्त करने का माध्यम बन चुका है। मनोहर श्याम जोशी के उपन्यास इस प्रवृत्ति का सशक्त उदाहरण हैं। उनके पात्र सामाजिक व्यवस्था से विद्रोह नहीं करते, बल्कि उसी व्यवस्था के भीतर रहकर मानसिक रूप से टूटते–बिखरते हैं।

उपन्यास "कुरु–कुरु स्वाहा" में नायक की मानसिक बेचौनी, असफलता और आत्मग्लानि आधुनिक व्यक्ति की प्रतिनिधि मनःस्थिति के रूप में उभरती है। यह उपन्यास इस तथ्य को रेखांकित करता है कि आधुनिक जीवन में सबसे बड़ा संघर्ष बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक होता है। इस दृष्टि से जोशी का योगदान हिन्दी उपन्यास को मनोवैज्ञानिक गहराई प्रदान करने में अत्यंत महत्वपूर्ण है। मनोहर श्याम जोशी के उपन्यासों का प्रमुख आधार शहरी मध्यवर्ग है। यह वह वर्ग है जो निरंतर सामाजिक, आर्थिक और नैतिक दबावों के बीच जीता है। जोशी ने इस वर्ग की बाहरी परिस्थितियों से अधिक उसकी मानसिक स्थिति को अपने उपन्यासों का विषय बनाया है। मध्यवर्गीय पात्र सामाजिक अपेक्षाओं, पारिवारिक दायित्वों और व्यक्तिगत आकांक्षाओं के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करते हुए भीतर ही भीतर टूटते चले जाते हैं। वे न तो अपने सपनों को पूरी तरह त्याग पाते हैं और न ही उन्हें साकार कर पाते हैं। यह असमंजस उनके भीतर गहरी कुंठा और अवसाद को जन्म देता है।

"हरिया हरक्यूलिस की हैरानी" में यह मानसिक द्वंद्व विशेष रूप से उभरकर सामने आता है, जहाँ पात्र अपने जीवन की विफलताओं को स्वीकार करने में असमर्थ रहता है। अतीत की स्मृतियाँ और वर्तमान की निराशाएँ मिलकर उसके मन में स्थायी तनाव उत्पन्न करती हैं। इस प्रकार जोशी के उपन्यास मध्यवर्गीय मानसिकता का प्रामाणिक और संवेदनशील चित्र प्रस्तुत करते हैं। मनोहर श्याम जोशी के उपन्यासों में 'संबंध' केवल सामाजिक संरचना नहीं, बल्कि मानसिक निर्भरता और असंतोष की जटिल प्रक्रिया है। उनके पात्र संबंधों में रहते हुए भी मानसिक रूप से अकेले होते हैं। यह अकेलापन उनके आत्मसंघर्ष को और अधिक गहरा बना देता है। पति–पत्नी, प्रेमी–प्रेमिका अथवा मित्र हर संबंध में अपेक्षाएँ, असुरक्षाएँ और भय उपस्थित हैं। जब ये अपेक्षाएँ पूरी नहीं होतीं, तो संबंध तनाव का कारण बन जाते हैं। यह तनाव पात्रों को आत्ममंथन और मानसिक विघटन की ओर ले जाता है। जैसा कि "हिन्दी उपन्यास और मनोविज्ञान" में संकेत मिलता है, आधुनिक उपन्यास में संबंधों की विफलता व्यक्ति के मानसिक संकट का प्रमुख कारण बन जाती है। मनोहर श्याम जोशी के उपन्यास इस तथ्य को गहरी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करते हैं। इस दृष्टि से उनका उपन्यास–जगत मनोवैज्ञानिक अध्ययन के लिए अत्यंत समृद्ध और उपयोगी है।

मनोहर श्याम जोशी की औपन्यासिक कृतियाँ हिन्दी उपन्यास परंपरा में इसलिए विशिष्ट मानी जाती हैं क्योंकि वे केवल कथा–विन्यास या सामाजिक यथार्थ की प्रस्तुति तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि मानव–मन की जटिल मानसिक प्रक्रियाओं को केंद्र में रखकर विकसित होती हैं। उनके उपन्यासों का सामान्य परिचय देते समय यह स्पष्ट हो जाता है कि जोशी की रचनात्मक दृष्टि मूलतः मनोवैज्ञानिक और संबंध–केन्द्रित है। जोशी के उपन्यासों में कथानक का विस्तार अपेक्षाकृत सीमित है, किंतु पात्रों की मानसिक स्थिति, आत्मसंघर्ष और आंतरिक द्वंद्व का विस्तार अत्यंत व्यापक है। यही कारण है कि उनके उपन्यास पढ़ते समय पाठक घटनाओं से अधिक पात्रों के मन में घटित होने वाली प्रक्रियाओं से जुड़ता है। यह प्रवृत्ति आधुनिक हिन्दी उपन्यास की उस दिशा को पुष्ट करती है, जहाँ व्यक्ति का अंतर्जगत साहित्य का प्रमुख विषय बन जाता है।

हिन्दी उपन्यास के विकास के संदर्भ में "हिन्दी उपन्यासः परंपरा और प्रयोग" में यह उल्लेख किया गया है कि आधुनिक उपन्यासकार कथा से अधिक चरित्र और चेतना को महत्व देता है। मनोहर श्याम जोशी के उपन्यास इस कथन की सशक्त पुष्टि करते हैं। उनके यहाँ पात्र किसी महान उद्देश्य या सामाजिक आंदोलन के वाहक नहीं होते, बल्कि सामान्य मध्यवर्गीय व्यक्ति होते हैं, जिनकी सबसे बड़ी लड़ाई उनके अपने मन से होती है। मनोहर श्याम जोशी के उपन्यासों में सामाजिक परिवेश, राजनीतिक संदर्भ और पारिवारिक संरचनाएँ उपस्थित अवश्य हैं, किंतु वे कथा का अंतिम लक्ष्य नहीं बनतीं। वे पात्रों की मानसिक स्थिति को आकार देने वाले कारकों के रूप में कार्य करती हैं। इस दृष्टि से जोशी के उपन्यास सामाजिक दस्तावेज़ कम और मनोवैज्ञानिक दस्तावेज़ अधिक प्रतीत होते हैं। उनके उपन्यासों का सामान्य परिचय देते समय यह भी ध्यान देने योग्य है कि जोशी ने अपने पात्रों को किसी एक आदर्श या विचारधारा में बाँधने का प्रयास नहीं किया। उनके पात्र विरोधाभासों से भरे हुए हैंकृवे एक साथ साहसी भी हैं और भयभीत भी, संवेदनशील भी हैं और आत्मकेंद्रित भी। यही विरोधाभास उनके उपन्यासों को यथार्थ और विश्वसनीय बनाता है।

निष्कर्ष

हिंदी साहित्य के आधुनिक कथाकारों में मनोहर श्याम जोशी का नाम विशेष सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने अपने सृजनात्मक कौशल के माध्यम से कथा–साहित्य को एक नवीन दृष्टि प्रदान की। उनके लेखन में भारतीय समाज की बदलती संवेदनाएँ, परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व तथा पश्चिमी प्रभावों के बीच भारतीय जीवन–मूल्यों की स्थिति स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। जोशी के उपन्यास केवल कथा–रचना नहीं हैं, बल्कि वे अपने समय की सामाजिक संरचना का विश्लेषणात्मक दस्तावेज भी हैं। उन्होंने समाज के विविध वर्गों विशेषकर निम्न, मध्यम और संघर्षशील वर्ग की आर्थिक, सांस्कृतिक तथा मानसिक स्थितियों को सूक्ष्म दृष्टि से चित्रित किया है। उनके साहित्य में जीवन के यथार्थ का निर्भीक प्रस्तुतीकरण मिलता है, जो उन्हें समकालीन कथाकारों से विशिष्ट बनाता है। लेखक ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों, सामाजिक अवलोकनों तथा जीवन–संघर्षों को रचनात्मक रूप देकर उपन्यासों में अभिव्यक्त किया है। यही कारण है कि उनके पात्र जीवंत प्रतीत होते हैं और पाठक उनसे आत्मीय संबंध स्थापित कर पाता है।

संदर्भ सूची

1. सिंह, नामवर (2002) *आधुनिक हिन्दी उपन्यास,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. जोशी, मनोहर श्याम (1996) *कसप,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. चतुर्वेदी, रामस्वरूप (1988) *हिन्दी उपन्यास और मनोविज्ञान,* भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
4. जोशी, मनोहर श्याम (1998) *हरिया हरक्यूलिस की हैरानी,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. सिंह, बच्चन (1998) *हिन्दी उपन्यासः परंपरा और प्रयोग,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

****